लेख (ट्रांसक्रिप्ट)

बारेक्मारे!

पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा के नाम में। 8 सितंबर को हम अपने प्रभु यीशु मसीह की माता संत मरियम का जन्मदिन मनाएंगे। यह कलीसिया के लिए एक महान अवसर है, और हम इसे थियोटोकोस की नेटिविटी (जन्मोत्सव) का पर्व कहते हैं। यह कलीसिया के सभी 12 महान पर्वों में से एक है। 'नेटिविटी ' शब्द का अर्थ है जन्म की प्रक्रिया। इसलिए थियोटोकोस के जन्म के पर्व के दिन, हम याद करते हैं कि संत मरियम का जन्म कैसे हुआ था। अब, पवित्र शास्त्र में, हमारे पास संत मरियम का जन्म कैसे हुआ था या उसके बचपन के विषय में विवरण नहीं है तथा इसके बारे में स्पष्ट जानकारी नहीं है। लेकिन यह जानकारी हमें दूसरी शताब्दी के एक दस्तावेज से प्रदान गई है जिसे प्रोटोवेंजेलियन या संत याकुब के सुसमाचार के रूप में जाना जाता है। माता मरियम को हम मसीही प्यार से संत मरियम कहते हैं, उनका जन्म यहोयाकीम और अन्ना नामक एक धर्मनिष्ठ यहूदी परिवार में हुआ था। वे एक बुजुर्ग दंपति थे जो प्रभु के प्रति बहुत वफादार हुआ करते थे, लेकिन वे इस बात को लेकर अत्यंत दुखी थे कि उनकी कोई संतान नहीं थी, क्योंकि यहूदी संस्कृति में बाँझपन को परमेश्वर के निरादर के संकेत के रूप में देखा जाता था।

एक दिन यहोयाकीम प्रभु को बलिदान चढ़ाने हेतु मंदिर गया और वहां महायाजक ने उसे बलि चढ़ाने की अनुमति नहीं दी क्योंकि उसने इसे एक कारण के रूप में उद्धृत किया कि यहोयाकीम निश्चित रूप से एक पापी होने के कारण ही निःसंतान है। यहोयाकीम बहुत दुखी था और ऐसा कहा जाता है कि वह वहां से चला गया और परमेश्वर से दया प्राप्त करने की याचना हेतु वह जंगल को चला गया। वह चालीस दिन और चालीस रात तक प्रभु से दया पाने हेतु प्रार्थना करता रहा। और उसी समय, उसकी पत्नी, अन्ना भी यरूशलेम में प्रार्थना कर रही थी। और उन 40 दिनों के अंत में, एक स्वर्गदूत यहोयाकीम और अन्ना दोनों को दिखाई दिया, और उन्हें बताया कि परमेश्वर ने उनकी प्रार्थना सुन ली है और उनको एक बच्चा होगा, जिसका नाम दुनिया भर में जाना जाएगा। और यह बच्ची मदर मैरी या संत मरियम थी, जो हमारे प्रभु यीशु मसीह की मां बनने के लिए नियुक्त की गई थी ।

और जब हम प्रोटोवेंजेलियन में दिए गए विवरणों को देखते हैं, तो हम समझते हैं कि संत मरियम का जन्म स्पष्ट रूप से मानव जाति के उद्धार के लिए परमेश्वर की योजना का हिस्सा था। क्योंकि वहाँ हम देखते हैं कि यहोयाकीम राजा दाऊद के वंश का था और अन्ना हारून के वंश की थी। इसलिए माता मरियम राजकीय और पुरोहित वंश दोनों के जन्म की थीं। तो आप देख सकते हैं कि यह कितना महत्वपूर्ण है

क्योंकि उसका पुत्र, हमारा प्रभु यीशु मसीह, दुनिया का राजा और हमारा महायाजक भी बनने जा रहा था।

यह पर्व 8 सितंबर को मनाया जाता है। बेशक, हम जानते हैं कि यह माता मरियम के जन्मदिन की सटीक तारीख नहीं है, लेकिन चर्च ने ऐतिहासिक कारणों से इस तारीख को चुना। यह कहा जाता है कि चौथी शताब्दी में, सम्राट कॉन्स्टेंटाइन की मां संत हेलेना ने एक चर्च का निर्माण किया और इसे थियोटोकोस के जन्मोत्सव को समर्पित किया। तब से चर्च ने फैसला किया कि यह वह तारीख है जिस दिन हम सभी मसीही संत मरियम का जन्मदिन मनाएंगे।

हो सकता है कुछ लोग आश्चर्यचकित हो, कि कलीसिया संत मरियम के जन्मदिन को इतना महत्व क्यों देती है। परन्तु कलीसिया द्वारा उनके जन्म दिन को मनाने के पीछे एक अतयंत महत्वपूर्ण कारण है। आप देखते हैं कि संत मरियम का जन्म, मानव जाति के उद्धार के लिए परमेश्वर की योजना के प्रकाशन का पहला प्रत्यक्ष संकेत है। हम जानते हैं कि प्रभु यीशु मसीह को हमारे उद्धारकर्ता के रूप में जन्म लेना पूर्व निर्धारित था। परन्तु मानवीय लहू और शरीर से पैदा हुआ कोई तो ऐसा होना चाहिए जो अपने गर्भ में उद्धारकर्ता को ले आने में आध्यात्मिक रूप से सक्षम हो। और उस व्यक्ति को पृथ्वी की समस्त पीढ़ियों में से चुना गया था, जो अत्यंत अनुग्रहित 'संत मरियम' थी। यही कारण है कि

हम संत मरियम के जन्म के चमत्कार का जश्न मनाते हैं, क्योंकि यह हमारे उद्धार के लिए परमेश्वर की योजना के प्रकट होने का प्रतीक है।

माता मरियम की जन्म के कई आइकन हैं जो चर्च के इतिहास से हमें प्रदान किये गए हैं। और इन सभी प्रतिरूपों में, ध्यान आकर्षित करने वाली बात यह है कि ये आइकन किसी भी अन्य जन्म की तरह ही सामान्य तरीके से माता मरियम के जन्म को दर्शाते हैं। इन आइकन में मरियम के माता-पिता को देखते हैं, आप ये भी देखते हैं कि उसकी मां उसे पकड़े हुए हैं, इन आइकनों में ऐसी कोई भी गहरी ईश्वरीय ज्ञान चित्रित नहीं है जैसा कि और कई अन्य आइकन में हैं। आप वहां उस प्रतिरूप में उसकी ओर देखते हुए उसके पिता संत यहोयाकीम को खड़े देखते हैं और फिर उनके चारों ओर कई सहायक हैं जो उसके जन्म में सहायता कर रहे हैं। यह बहुत महत्वपूर्ण है क्योंकि यह आइकन हमें बताता है कि माता मरियम का जन्म हम सब लोगों की तरह सामान्य मनुष्यों के जैसे ही था। अब यह बहुत महत्वपूर्ण है क्योंकि पश्चिमी चर्चों के विपरीत, ऑर्थोडॉक्स कलीसिया ये मानते हैं और दावा करते हैं कि संत मरियम सभी मनुष्यों की तरह ही मूल पाप की उत्तराधिकारी थी। वह भी अन्य मनुष्यों के जैसे ही सामान्य प्रक्रिया से गर्भ में आयी थी और पैदा हुई थी, और इसलिए, सभी पापियों की तरह, उसे भी बचाए जाने की आवश्यकता थी। और वह सचमुच परमेश्वर के द्वारा बचाई

और पवित्र की गई थी, ताकि वह परमेश्वर को इस जगत में लाने हेतु एक मानवीय पात्र बन सके, और इसलिए हम उनका आदर करते हैं।

थियोटोकोस के जन्मोत्सव पर्व में हमारे लिए बहुत सारे सीख है। संत यहोयाकीम और संत अन्ना की कहानी अंततः हमारे लिए परमेश्वर की इच्छा की खोज के माध्यम से हमारे जीवन का अर्थ ढूंढ लेने के विषय में है। जब संत यहोयाकीम और संत अन्ना ने उपवास और प्रार्थना के साथ प्रभु को ढूंढा, फलस्वरूप परमेश्वर ने उनकी पुकार सुनी। और उनके द्वारा परमेश्वर ने संत मरियम को भेजा जिसके माध्यम से उद्धार सम्पूर्ण जगत में आने वाला था। चर्च में संतों के समूह में संत मरियम का सर्वोच्च स्थान है। क्यों? दो कारणों से। पहला कारण क्योंकि उद्धार के इतिहास में उनका स्थान है। परमेश्वर के द्वारा उद्धारकर्ता को संसार में लाने के लिए उसे चुना गया था। पृथ्वी पर की समस्त पीढ़ियों में से इस उच्चतम अनुग्रहित पद को पाने हेतु वह चुनी गई थी। दूसरा, हम उनकी अनुकरणीय आज्ञाकारिता और विनम्रता के कारण उनका सम्मान करते हैं। उसने परमेश्वर को 'हाँ' कहा। वह 'नहीं' भी बोल सकती थी, लेकिन उसने 'हां' कह दिया। उसकी आज्ञाकारिता के कारण वह अत्यंत अनुग्रहित हुई और उसने हमारे उद्धारकर्ता को इस जगत में लाया। और वह बहुत दीन थी। परमेश्वर के बड़े अनुग्रह को पाने पर भी पुरे सुसमाचार में मरियम ने किसी का प्रकार का अहंकार या घमंड नहीं दिखाया। और इसलिए कलीसिया उनका आदर करती है।

और अंत में, थियोटोकोस के जन्मोत्सव का पर्व हमें याद दिलाता है कि, संत मरियम की तरह, हमें भी परमेश्वर का मंदिर बनने के लिए बुलाया गया है। हमें मसीह को धारण करने के लिए बुलाया गया है। जैसा कि संत पौलुस कहते हैं, हम प्रभु यीशु मसीह पर विश्वास करने, उनके स्वभाव, उनकी विनम्रता, उनकी आज्ञाकारिता, उनकी दया, प्रेम, दया को धारण करने के लिए बुलाये गए है। और 8 वीं शताब्दी के संत, क्रेते के संत अंद्रियास, वह जन्मोत्सव के इस पर्व के विषय में इस बिंदु को इस कथन के माध्यम से अच्छी तरह से कहते हैं। वे कहते हैं, 'यह दिन हम सब के लिए सारे पवित्र दिनों की शुरुआत है। यह दयालुता और सच्चाई का द्वार है। आज का दिन सम्पूर्ण सृष्टि के रचियता के लिए व्यवस्थित है'। एक प्रेरणा प्राप्त कलीसिया और सृष्टि खुद को अपने सृष्टिकर्ता का दिव्य निवास स्थान बनने के लिए तैयार करती है। इसलिए, थियोटोकोस के जन्म के दिन, आइए हम अपने आप को जीवित परमेश्वर का मंदिर बनने के लिए तैयार करें!